VOL- XI | ISSUE- XI | NOVEMBER | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

गोर बंजारा समाज में जातीय समूहों व्यवस्था

प्रा डॉ. जाधव दत्ता उध्दव
इतिहास विभाग प्रमुख व संशोधन मार्गदर्शक
श्री रेणुकादेवी कला, वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, माहूर, जी नांदेड
jadhavdu24@gmail.com

प्रस्तावना :

संपूर्ण भारत में बंजारा समाज की कई उपजातियां है, जिनमें राजस्थान में बामणिया, लबाना, मारू भाट और गवारियां उपजाति है। गोर बंजारा समाज में अलग अलग उपजात है। गोर बंजारा की गोरबोली में इसे ***कुण से जत्या रो छी****। जत्या याने जात या गोत को कहा जाता है । गोरधाटी में अलग जात व्यवस्था है। गोरबंजारा समाज वैदिक प्रथाओं के चतुर्थ वर्ण के दायरे से बाहर है। गोर बंजारा समाज में कर्म के आधार पर समाज के जात अतर्गत वर्ग व्यवस्था बनीं है। इसी प्रकार व्यवसाय के आधार पर विभिन्न जातिये समुहों का निर्माण हुआ है।*

१.सुकाली २. चारण ३. लभाण ४. मथुरीया ५. सनार बंजारा ६.धाढी ७. ढालिया बंजारा ८. नाई बंजारा ९. भाट बंजारा १०. मारू बंजारा ११. शिकलगिरी बंजारा १२. कंजार

१. **सुकाली बंजारा** : यह बंजारा समुह की एक उपजात है। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तामिलनाडू इन प्रदेश के बंजारा समुहों को सुकाली कहा जाता है। इन समूहों के उपनाम बंजारा समाज के नायक के उपनाम से अपभ्रंश होतें हुए नायकडु ओर नायडू बन गया है। सुकाली बंजारा समुदाय सुपारी का व्यापार करता था। इसीलिए सुपारी से अपभ्रंश होकर सुकाली समुदाय कहा जाता है। गोर बनजारे सुकाली समुदाय से विवाह संबंध बनाते नहीं। सुकाली समुदाय को गोर बंजारा निचला वर्गों समझते हैं। गोर बंजारा समाज के किसी व्यक्ति को गाली देने वाले कहते हैं कि, '**हुड सुकाली**' याने कम विकसित माना जाता है। भारत देश के स्वतंत्र के बाद सुकाली समुदाय गोर बंजारा समाज से अपनी अलग पहचान बना लिए है। प्रदेशों के अनुसार पोषाक, भाषा और रहन सहन में काफी बदलाव हो चुका है।

२ * चारण (चारवाह) बंजारा ; यह बंजारा समुदाय की उपजात है। भारत के उत्तर, मध्य पश्चिम प्रदेशों के बंजारा समुदाय को चारण या चारवाह कहते हैं। इस समुदाय का व्यवसाय जानवरों को पालने का है। भारत के किसी प्रदेश में यह आजभी अपने जानवरों चराणे या चारा के लिए आते जाते रहते हैं। यह बंजारा समुदाय जडीबुटी का ज्ञान रखते हैं। इन्हें पुराणो के चरणों का ज्ञान है। इसी चरणों से अपभ्रंश से ये चारण समुदाय के नाम से जाने लगे हैं। गोर बंजारा समाज चारण समुदाय से विवाह संबंध नहीं कर सकता। स्वतंत्र भारत में यह समुदाय अपने में बदलाव कर लिया है।

३ * लभाण बंजारा ; यह बंजारा समुहों की एक स्वतंत्र जात है। यह समुहों लवण याने नमक का व्यापार करता था। यह समुहों लवण का अपभ्रंश लभाण नामसे जाना जाता है। यह समुदाय क्षत्रिय के तरह युध्द करता था। इस समुदाय के महिला का पोषाक़ गोर बंजारा समाज की महिलाओं पोषक से अलग होता है। मध्य युगीन काल में यह समुदाय यूध्द के समय किसी प्रदेश के राजाओं के मागने पर सैन्य को रसद पहुचाने का काम करते थे। इस समुदाय के पास गाय बैल संख्या हजारों में होती थी। ये गाय बैल इनके सामान लादने का साधन होता था। यह समुदाय गोर बंजारा समाज से विवाह संबंध नहीं कर सकता। इस समुदाय के उपनाम अपने गोत्र से लगाये जाते हैं। जो गोर बंजारा समाज से अलग होतें हैं।

४ * मथुरीया बंजारा : यह बंजारा समूहों की एक स्वतंत्र जात है। यह समुदाय गऊ पालक है। यह समुदाय बंजारा समुहों में उच्च वर्गीय माना जाता है। यह समुदाय शाकाहारी होता है। मथुरीया समुदाय ब्राह्मणों जैसा पुजापाठ में रुचि रखता है। यह समुदाय भगवान क्रष्ण को अपना वंशज मानते हैं। भारत देश के मथुरा शहर इनका मुख्य केंद्र रहा है। इस

समुदाय की महिलाओं के पोषाक़ गोरबंजारा महिलाओं के पोषाक़ से अलग होता है। इस समुदाय के उपनाम गोरबंजारा समाज से अलग होता है। इस समुदाय का व्यापार गोधन से प्राप्त दुध, दही, घी, इन चिजोंका होता है।

५ * सनार बंजारा : गोर बंजारा समाज में एक उपजात है। यह सोने चांदी का व्यापार करने वाले है। इसके रहन सहन गोरधाटी से मिलते हैं। गोर बंजारा समाज के विवाह संबंध नहीं होता। सनार बंजारों मे अंतर्गत विवाह संबंध होता है। इनका समुदाय जादा संख्या में नहीं होता। गोरबंजारा समाज के गाँव इनके में दो या तिन घर अपने परिवार के साथ रहते हैं। सनार बंजारा गाव को सनारपेठ कहा जाता है।

६ * धाढी बंजारा: गोर बंजारा समाज के अंतर्गत एक उपजात है। धाढी यह उपजात गोर बंजारा समाज में संदेश पहुचाने के कार्य करता है। धाढी का व्यवसाय एकतारा बजाकर गोरबंजारा समाज में मनोरंजन करते हैं। इसके बदले इनको बक्षिष दिया जाता है। गोर बंजारा समाज के वस्ती के नायक के परवाने गोर बंजारा समाज के दुसरे वस्ती के गाव के नायक तक पहुचाने का कार्य धाढी करते हैं। धाढी उपजात का विवाह संबंध गोर बंजारा समाज के साथ नहीं होता। उनके अंतर्गत ही नाते संबंध जोडे जाते हैं। गोर बंजारा समाज के वस्ती में इनके दो या तिन घर अपने परिवार के साथ रहते हैं। गोर बंजारा समाज में धाढी को कनिष्ठ स्तर दर्जा दिया गया है।

७ * ढालिया बंजारा : यह गोर बंजारा समाज की उपजात है। गोर बंजारा समाज में ढालिया का व्यवसाय डफडा बजाना होता है। गोर बंजारा समाज के किसी कार्यक्रम में डफडा बजाने के लिए ढालीया उपजात को बुलाया जाता है। गोर बंजारा समाज के गाव में ढालिया उपजात भिक्षा मांगकर अपने परिवार का उदर निर्वाह करता है। ढालीया उपजात जिस घर के कार्यक्रम लिए डफडा बजाते हैं। ढालिया को डफडा बजाने के बाद बक्षिष दिया जाता है। ढालिया उपजात को गोर बंजारा समाज में निम्नस्तर मानते हैं। ढालिया उपजात कार्य के आधार पर बन गयी है।

८ * नाई बंजारा : गोर बंजारा समाज के अंतर्गत नाई बंजारा एक उपजात है। नाई बंजारा यह उपजात कार्य के आधार पर बनी हुई है। गोर बंजारा समाज में नाई बंजारा का कार्य बाल काटना होता है। गोर बंजारा समाज के वस्ती में नाई बंजारा का एक या दो घर अपने परिवार के साथ रहते हैं। नाई बंजारा का विवाह संबंध गोर बंजारा समाज के साथ नहीं होता। नाई बंजारा को उनके कार्य के बदले एक ही बार सुगी के समय अन्नाज के रूप में मोबदला दिया जाता है।

९ * भाट बंजारा : गोरबंजारा समाज में भाट बंजारा एक उपजात है। भाट बंजारा का मुख्य व्यवसाय गोर बंजारा समाज के महापुरुष की स्तुति करना होता है। भाट बंजारा राजा महाराज के दरबार में उनके जीवन चरीत्र पर काव्य रचना करने के लिए रखा जाता था। प्रुर्थीराज चव्हाण के दरबार में चंदबरदाई नामक बंजारा भाट था। चंदबरदाई ने प्रुर्थीराज चव्हाण के जीवन पर '**प्रुर्थीराज रासो**' नामक ग्रंथ की रचना की थी। गोर बंजारा समाज के साथ विवाह संबंध नहीं होता। भाट बंजारा का उपनाम अपने गोत्र से जुड़े होते हैं। भाट बंजारा का उदर निर्वाह बक्षिष के रूप में मिली हुई रासी से होता है। भाट बंजारा की संख्या कम होती है। गोर बंजारा समाज की वस्ती में एखादा परिवार रहता है।

१० * मारु बंजारा : गोर बंजारा समाज की एक उपजात है। मारु बंजारा अपने व्यवसाय के आधार पर एक उपजात है। मारु बंजारा एकतारा नामक वाद्ययंत्र लेकर चलता है। मारु बंजारा गीत गायन काम करते हैं। मारु बंजारा गोरबोली गाते हैं। मारु बंजारा गाव वस्ती में शहरों में अपने एकतारा नामक वाद्ययंत्र लेकर चलतें हुए गाते रहते हैं। मारु बंजारा का एक जगह ठिकाना नहीं होता। मारु बंजारा अपने गोत्र में विवाह संबंध करते हैं। मारु बंजारा उपजात में बड़े बड़े गायक बने हैं।

११ * शिकलगिरी बंजारा : गोर बंजारा समाज में शिकलगिरी बंजारा एक उपजात है। शिकलगिरी बंजारा का व्यवसाय लोहे के धातु से हत्यारे बनाने का होता है। शिकलगिरी बंजारा ज्यादातर उत्तर मध्य भारत में जादा संख्या में है। शिकलगिरी बंजारा का महिलाओं के पोशाक गोर बंजारा समाज के महिलाओं के पोशाक से अलग होता है। शिकलगिरी बंजारा आज भी वस्तु बनाकर बेचता है।

१२. * कंजार बंजारा : यह समाज कबीर पंथी होता है। यह समाज के मुख्य कार्य एकतारा नामक वाद्ययंत्र लेकर चलता हुआ गाता है। यह समाज से गोर बंजारा समाज से रिश्तेदारी नहीं होती है। भारत में यह समाज संख्या में कम है। इस समाज को गाना गाने वाले लोग कहते हैं। यह समाज का पोशाक गोर बंजारा समाज के समान नहीं होता। इस समाज की संख्या उत्तर भारत में दिखाई देती है।

गोर बंजारा समाज के वंशज हर धर्म के समूहों में विभाजित हुए हैं। भारतीय जाती व्यवस्था में गोर बंजारा किसी वर्ण के साथ नहीं है। गोर बंजारा समाज में अलग अलग कर्म के आधार पर वर्ग व्यवस्था बनी हुई है। गोर बंजारा समाज में परंपरागत अपने पुर्वज के कुल के आधार पर गोत्र से उपनाम बनाया गया है। गोर बंजारा समाज में गोत, पाढा, से पहचान की जाती है। गोर बंजारा समाज में विवाह से पहले नाते संबंध जोडने के लिए यह उपनाम की जानकारी आवश्यक मानीं जाती है। गोर बंजारा समाज में पाच उपनाम प्रमुख माने गये है। १. राठोड २. जाधव ३. चव्हाण ४. पवार ५. आडे. गोर बंजारा समाज में समांतर उपनामों और अलग जातवर्गों में नाते संबंध स्थापित नहीं किये जाते। एक प्रमुख उपनाम याने राठोड वाले दुसरे चार जाधव, पवार, चव्हाण, और आडे उपनामों से लडका लडकी का विवाह कर शकते है। गोर बंजारा समाज के गोत्र, ९७ गोत है। गोर बंजारा समाज के प्रमुख गोत्र में राठोड के २७ गोत है। जाधव उपनामों के ५२ गोत है। पवार उपनामों के १२ गोत है। चव्हाण उपनामों ६ गोत है। आडे के उपनामों ७ गोत् है। चव्हाण- ०६ और निसर्ग रुतुकी संख्या ०६ होती है। पवार- १२ और साल के माह १२ होते हैं। राठोड- २७ गोत और सालमें २७ नक्षत्र होतें है। जाधव- ५२ गोत और साल में ५२ सप्ताह होतें है। आडे- ०७ आणि सालमें फक्त ०७ वार होतें है। गोर बंजारा समाज में निसर्ग के ऋतु चक्र को बहुत महत्व दिया गया है।

सांराश :

गोर बंजारा समाज में अलग अलग उपनाम दिया गया है। इस समुदायों के राठोड - जाधव- पवार- चव्हाण यह उपनाम से पहचानें जातें हैं। गोर बंजारा समाज के अन्तर्गत विवाह संबंध होता है। गोर बंजारा समाज के मुल जात में यह विवाह संबंध होता है। उपजात के साथ यह विवाह संबंध नहीं होता है। इस प्रकार गोर बंजारा समाज अनेक उपजात में बाटा गया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. बळीराम पाटील : बंजारा लोकांचा इतिहास : दुर्गा प्रकाशन, कारंजा लाड.
2. बळीराम पाटील : आलेख समाज प्रगतीचा : दुर्गा प्रकाशन, कारंजा लाड.
3. डॉ. श्री राम शर्मा : बंजारा समाज : हैद्राबाद प्रकाशन हैद्राबाद.
4. भाई प्रेमसिंग जाधव : बंजारा दर्पण : विद्या प्रकाशन औरंगाबाद, 2002.
5. डॉ. दत्ता उध्दव जाधव : माहूरगडाची रायबागन : ए. वन. प्रकाशन, परभणी. 2015

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com